डॉ. बिभा कुमारी

हिंदी विभाग

विश्वेश्वर सिंह जनता कॉलेज, राजनगर, मधुबनी

ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा

बीए हिंदी प्रतिष्ठा, पथम वर्ष प्रथम पत्र तथा बीए प्रथम वर्ष, प्रथम पत्र – ऐच्छिक हिंदी

भारतेंदु युग : प्रवृत्तियाँ और प्रमुख रचनाकार

भारतेंदु युगीन साहित्य की प्रमुख प्रवृत्तियाँ निम्नलिखित हैं –

1.गद्य लेखन का आविर्भाव –

> भारतेन्दु युग में गद्य – लेखन प्रमुखता से हुआ। आधुनिक हिंदी साहित्य के प्रथम कालखंड को भारतेंदु हरिश्चंद्र के नाम पर भारतेन्दु युग कहा जाता है। इस युग की प्रमुख उपलब्धियों में से एक है – गद्य का आविर्भाव।

2.नाट्य लेखन –

भारतेंदु युग में गद्य – लेखन का आविर्भाव हुआ और विभिन्न विधाओं में गद्य लेखन आरंभ हो गया। भारतेंदु युगीन समस्त गद्य – विधाओं में गद्य का उत्कृष्ट रूप नाटकों में मिलता है। इन नाटकों में खड़ी बोली गद्य के विविध रूप दिखलाई पड़ते हैं।

3. जनबोली को प्रमुखता –

भारतेंदुयुगीन गद्य लेखन की भाषा जन – बोलियों से मिलती – जुलती है।

4.पत्र – पत्रिकाओं का आरंभ –

भारतेंदु युग में पत्र – पत्रिकाओं का आरंभ होना इस युग की बहुत बड़ी उपलब्धि है। स्वयं भारतेंदु हरिश्चंद्र एवं भारतेंदु – मंडल के लेखक विद्वानों ने अनेक पत्र – पत्रिकाओं का संपादन और प्रकाशन किया। इन पत्रिकाओं में अनेक निबंध प्रकाशित होते थे जो आम जन – जीवन में जागरूकता लाने में सहायक होते थे। भारतेंदु युग के निबंधों में गद्य का जीवंत रूप मिलता है। भारतेंदु युग में व्यक्तिपरक और ललित निबंध प्रभूत मात्रा में लिखे गए।

5. निबंधकारों का जीवंत व्यक्तित्व –

भारतेंदु युगीन निबंधकारों ने साहित्य और समाज के प्रति अपने दायित्वों को पूर्ण निष्ठा और ईमानदारी से निभाया। इन निबंधकारों का जीवंत व्यक्तित्व इनके निबंधों में स्पष्ट झलकता है।

6. खड़ीबोली का प्रयोग –

भारतेंदु युग की दूसरी बड़ी उपलब्धि है खड़ी बोली। भारतेंदु युगीन साहित्य में खड़ीबोली के अनेक स्तरों और रूपों का प्रयोग कियस गया है।

7. नवीन विधाओं का आरंभ –

भारतेंदु युग में गद्य – लेखन के क्षेत्र में समीक्षा, उपन्यास, कहानी और इतिहास – लेखन जैसी नवीन गद्य – विधाओं का प्रवर्तन हुआ।

8. हिंदी की शब्दावली में नए शब्दों का प्रवेश –

भारतेंदु युगीन साहित्यकारों ने अपने लेखन में अन्य भाषा के शब्दों को भी शामिल किया। इससे हिंदी की शब्दावली और भी अधिक समृद्ध हो सकी।

9. गद्य के समानांतर कविता –

भारतेंदु युग में खड़ी बोली और गद्य लेखन का प्रवेश हो चुका था। तथापि काव्य – लेखन पारंपरिक ब्रजभाषा में हो रहा था। कलेवर पारंपरिक होते हुए भी कथ्य आधुनिक था। नए – नए विषयों पर काव्यलेखन होने लगा था।

10. भाषा और साहित्य को नवीन ऊंचाई –

छापेखाने का आरंभ एवं फोर्ट विलियम कॉलेज की स्थापना भारतेंदु युग की तीसरी और चौथी बड़ी उपलब्धि है। इन समस्त उपलब्धियों के सँग भारतेंदु युग में हिंदी भाषा और साहित्य को नवीन ऊंचाई प्राप्त हो सकी।

इस युग के प्रमुख रचनाकार हैं –

स्वयं भारतेंदु, प्रताप नारायण मिश्र, बालकृष्ण भट्ट, उपाध्याय बदरीनारायण चौधरी प्रेमघन आदि।